23

भारतीय भाषाओं के बारे में एक नोट

पूरी दुनिया में जितनी भाषाएँ हैं वे सभी एक-दूसरे से भिन्न हैं अथवा समान, यह प्रश्न हम सभी को यदा-कदा परेशान करता रहता है। प्रस्तुत लेख कहता है कि इस प्रश्न का उत्तर हाँ भी है और ना भी। विभिन्न भारतीय भाषाओं से उदाहरण लेते हुए लेख यह समझने में मदद करता है कि अलग-अलग भारतीय भाषाओं में क्या-क्या समानताएँ व क्या विभिन्नताएँ हैं। लेख इन समानताओं व विभिन्नताओं के होने के क्या सम्भावित कारण हो सकते हैं, इस सन्दर्भ में तर्क भी प्रस्तुत करता है। लेख यह बताता है कि भले ही बाहरी तौर पर हमें भाषाएँ भिन्न दिखाई देती हैं लेकिन आन्तरिक तौर पर उनमें कई समानताएँ होती हैं। हिन्दी, तेलुगू, ओडिया, मिज़ो भाषाओं से अलग-अलग अवयवों के उदाहरण लेकर लेख भाषाओं की इन आन्तरिक समानताओं को बखूबी दर्शाता है। और इन मान्यताओं को निराधार साबित करता है कि चूँकि भाषाएँ अलग होती हैं अतः बच्चों को भाषा सीखने में कठिनाई होती है, एक भाषा दूसरी भाषा सीखने को बाधित करती है, बहुभाषी कक्षा सम्भव ही नहीं है, वगैरह-वगैरह।

माना जाता है कि विश्व भर में पाँच हज़ार के करीब भाषाएँ बोली जाती हैं। विशेष बात यह है कि उनमें से एक तिहाई के करीब भारत में ही बोली जाती हैं। भारत में बोली जाने वाली इन भाषाओं की संख्या करीब 1500 बताई जाती है। चाहे भारत की भाषाओं के बारे में यह संख्या 1500 सही हो या न हो, इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि भारत एक बहुभाषी देश है। इस सन्दर्भ में दो प्रश्न उठते हैं:

1. अगर इतनी सारी भाषाएँ एक ही देश में बोली जाती हैं तो क्या लोगों को आपस में बातचीत करने में कोई बाधा नहीं होती होगी? और;

2. क्या ये सारी भाषाएँ एक-दूसरे से बिलकुल भिन्न हैं और क्या इन भाषाओं के बीच कोई सादृश्यता या समानता नहीं है?

इस लेख का उद्‌देश्य यह साबित करना है कि इतनी सारी भाषाओं के एक देश में बोले जाने के बावजूद भी आपस में बातचीत करने में कोई बाधा नहीं होती। भले ही भाषाएँ एक-दूसरे से बाह्य रूप से भिन्न हों, भारत की भाषाओं में अन्तर्निहित रूप से काफी समानता है। यह समानता क्यों है, इसकी चर्चा हम आगे करेंगे।

पश्चिमी देश मुख्यत: एकभाषी देश हैं। कई पश्चिमी भाषा वैज्ञानिकों की राय यह है कि इतनी सारी भाषाओं का एक ही क्षेत्र में प्रयोग किए जाने से लोगों को एक-दूसरे को समझने में कठिनाई होती है। लेकिन वास्तविकता यह है कि ऐसी कोई कठिनाई नहीं होती। प्रमुख भारतीय भाषा वैज्ञानिकों की राय यह है कि भारत में हर पढ़ा-लिखा व्यक्ति अपनी मातृभाषा के अलावा कम से कम एक या दो और भाषाएँ तो जानता ही है। वह इन भाषाओं के ज़रिए अपने रोज़मर्रा के कामकाज आराम से चला लेता है। आप मुम्बई शहर में जाइए या दिल्ली या कोलकाता - कहीं भी भाषा बाधा नहीं बनती। चाहे मज़दूर हो या व्यापारी, बाबू हो या अफसर, भाषा की वजह से किसी का काम नहीं रुकता।

अब हम भारतीय भाषाओं की समानता या भिन्नता पर विचार करेंगे। पहला प्रश्न यह उठता है क्या विश्व की भाषाएँ एक-दूसरे से बिलकुल भिन्न हैं? इस प्रश्न का उत्तर 'हाँ' भी है और 'नहीं' भी। हाँ इसलिए है क्योंकि हर भाषा की संज्ञाएँ, सर्वनाम, क्रियाएँ, परिसर्ग, उपसर्ग, विशेषण, क्रिया विशेषण दूसरी भाषा से अलग होती हैं, अर्थात् हरेक भाषा की शब्दावली दूसरी भाषा की शब्दावली से भिन्न है। लेकिन अगर दो भाषाओं का प्रादुर्भाव एक स्रोत से हुआ हो तो दोनों भाषाओं में अक्सर कुछ समान शब्दावली पाई जाती है। मसलन, अँग्रेज़ी और अन्य यूरोपीय भाषाओं में या संस्कृत और अन्य आर्य भाषाओं में। समान शब्दावली होने का दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि किन्हीं ऐतिहासिक कारणों से दो भिन्न भाषाएँ एक-दूसरे के सम्पर्क में रही हों जिसकी वजह से इन दोनों के बीच शब्दावली का लेन-देन हुआ हो, जैसे कि भारतीय भाषाओं और अँग्रेज़ी के बीच हुआ है। एक और कारण यह भी हो सकता है कि कुछ भाषाओं के क्षेत्र में कोई विदेशी भाषा सरकारी कामकाज में या अदालतों में प्रयुक्त की गई हो। उदाहरण के लिए, पूरे भारत में फारसी का प्रयोग सरकारी कामकाज में किया गया था जिसकी वजह से भारत की सभी भाषाओं में फारसी व अरबी शब्दावली मौजूद है।

अब प्रश्न उठता है कि अगर शब्दावली अलग है तो क्या भाषाएँ एक-दूसरे से बिलकुल भिन्न हैं? इसका उत्तर है, नहीं। प्रमुख भाषाविज्ञानी नोम चॉमस्की के अनुसार भाषा मानव के मस्तिष्क में सहज रूप से जन्म से ही उपलब्ध है (Genetic Endowment of Language)। चाहे वह किसी भी भाषा का भाषी हो, जो ज्ञान जन्मत: उपलब्ध है वह सभी भाषा-भाषियों में एक ही प्रकार का (यानी समान) होता है। अर्थात् मानव के मस्तिष्क में आन्तरिक रूप से सभी भाषाओं का गठन एक जैसा है। जिस भाषा प्रान्त में बच्चा जन्म लेता है, उसी भाषा को वह अपनाता

है। बच्चा भाषा आसानी से बहुत ही कम समय में इसलिए सीख पाता है क्योंकि उसके मस्तिष्क में भाषा का पूरा गठन भाषा के सार्वभौमिक सिद्धान्तों (Universal Language) के रूप में उपलब्ध है। भाषा के सार्वभौमिक सिद्धान्तों से यह तात्पर्य है कि वे भाषा के इस प्रकार के नियम हैं जो विश्व की सभी भाषाओं में समान रूप से पाए जाते हैं। उदाहरण के लिए, वाक्य में क्रिया का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। वाक्य में क्रिया का स्थान अन्त में या बीच में या पहले हो सकता है। हिन्दी, पंजाबी, तेलुगू, कन्नड़, मणिपुरी, मिज़ो, कोरियाई, जापानी, तुर्की आदि भाषाओं में क्रिया वाक्य के अन्त में आती है इसलिए इनको हम क्रिया-अन्त भाषाएँ कह सकते हैं। इन भाषाओं में पदक्रम है - कर्त्ता (Subject), कर्म (Object) और क्रिया (Verb)। इसको हम SOV पदक्रम कहते हैं। अँग्रेज़ी, फ्रेंच, इतालवी, स्पैनिश, पुर्तगाली आदि जिन भाषाओं में क्रिया वाक्य के बीच में (अर्थात् कर्म से पहले) आती है, इनको हम क्रिया-मध्य भाषाएँ कह सकते हैं। अरबी, हीब्रू (मुख्यतः यहूदी लोगों की भाषा) में क्रिया सर्वप्रथम होती है। इनको हम क्रिया-आरम्भिक भाषाएँ कह सकते हैं। त्ता त्

वाक्य के विभिन्न अन्य अवयवों का स्थान क्रिया के स्थान पर निर्भर करता है, जैसे वाक्य में परसर्ग (Post-position) है या पूर्वसर्ग (Preposition) है अथवा उसमें विशेषण संज्ञा के पहले आता है या बाद में आता है इत्यादि। उदाहरण के लिए, जिन भाषाओं में क्रिया अन्त में आती है उनमें परसर्ग होते हैं। परसर्ग संज्ञा के बाद में आते हैं, जैसे, 'मेज़ पर', यानी हिन्दी में 'मेज़ पर' ही होगा न कि *'पर मेज' (*चिन्ह का अर्थ है वह वाक्य या पदबन्ध अव्याकरणिक है)। यह उन भाषाओं से फर्क है जिनमें क्रिया मध्य में आती है या अन्त में, इन भाषाओं में क्रिया का स्थान वाक्य के अन्त में नहीं होता उनमें अधिकांशतः पूर्वसर्ग होते हैं। उदाहरण के लिए, अँग्रेज़ी में On the table कहना व्याकरणिक है, न कि *The table on। इसका कारण यह है कि अँग्रेज़ी में क्रिया कर्ता के बाद और कर्म के पहले, वाक्य के बीच में आती है। अँग्रेज़ी में पदक्रम है कर्ता, क्रिया और कर्म (Subject-Verb-Object)। इसको हम SVO पदक्रम कहते हैं। जबकि मालागेसी जैसी भाषाएँ जिनमें क्रिया शुरू में आती हैं उनमें पदक्रम है क्रिया, कर्ता और कर्म (Verb-Subject-Object) इनमें भी सिर्फ पूर्वसर्ग होते हैं। (हालांकि अंग्रेज़ी में भी ago एक परसर्ग होता जो काफी उपयोग होता है।)

आइए, अब हम भारतीय भाषाओं को गौर से देखें। भारत में चार भाषा परिवार की भाषाएँ बोली जाती हैं। ये परिवार हैं - आर्य भाषा परिवार (Indo-Aryan), द्रविड़ भाषा परिवार (Dravidian), तिब्बतो-बर्मन भाषा परिवार (Tibeto-Burman) तथा ऑस्ट्रो-एशियाटिक या मुण्डा भाषा परिवार (Austro-Asiatic or Munda)। आर्यभाषा परिवार की भाषाएँ हैं - संस्कृत, पालि, प्राकृत, हिन्दी-उर्दू, पंजाबी, गुजराती, मराठी, कोंकणी, नेपाली, असमिया, बांग्ला, ओडिया, कश्मीरी और श्रीलंका में बोली जाने वाली भाषा सिंहला। द्रविड़ भाषा परिवार की मुख्य भाषाएँ हैं - मलयालम, तमिल, कन्नड़, तथा तेलुगू। मुण्डा भाषा परिवार की मुख्य भाषाएँ हैं - मणिपुरी, अंगामी नागा, तांगखुल, नागा, मिज़ो, तांग्सा इत्यादि। सिर्फ खासी भाषा को छोड़कर बाकी सब भाषाएँ क्रिया-अन्त कर्त्ता, कर्म, क्रिया - यानी SOV भाषाएँ हैं। अर्थात वाक्य विन्यास की

दृष्टि से इन सब में कई समानताएँ पाई जानी चाहिए। आइए, अब हम देखते हैं कि भारतीय भाषाओं में क्या-क्या सार्वभौमिक नियम पाए जाते हैं?

1. क्रिया-अन्त भाषाओं में सहायक क्रिया मुख्य क्रिया के बाद आती है। उदाहरण के लिए :

हिन्दी : **कमला** पढ़ रही है।

इस वाक्य में **पढ़** मुख्य क्रिया है, **रही है** सहायक क्रिया है।

तेलुगू :	कमला	चदुवु	तुन्नदि
		पढ़	रही है
		मुख्य क्रिया	सहायक क्रिया

मिज़ो :	कन	कल	अंग
	हम	जा	एंगे
		मुख्य क्रिया	सहायक क्रिया

2. क्रिया-अन्त भाषाओं में परसर्ग होते हैं।

हिन्दी :	कमरे	में
	संज्ञा	परसर्ग
तेलुगू :	गदि	लो
	कमरे	में
मिज़ो :	रूम	आह
	कमरे	में

3. सामान्य रूप से परोक्ष कर्म (Indirect Object) प्रत्यक्ष कर्म (Direct Object) के पहले आता है।

हिन्दी :	राम	राधिका को	किताब देगा।
	परोक्ष कर्म	प्रत्यक्ष कर्म	

तेलुगु :	रामु	राधिका कि	पुस्तकम् इस्ताडु
	राम	**राधिका को**	**किताब देगा**
	परोक्ष कर्म	प्रत्यक्ष कर्म	

मिज़ो :	ज़ोवन	ज़ोवि ह्नेना	लेखबू अ-पे-अंग
	ज़ोवा	**ज़ोवि को**	**किताब देगा**
	परोक्ष कर्म	प्रत्यक्ष कर्म	

4. क्रिया-अन्त भाषाओं में समय का द्योतक क्रिया विशेषण सर्वथा स्थान के बारे में बताने वाले क्रिया विशेषण से पहले आता है। अर्थात् वाक्य में इन दोनों का क्रम इस प्रकार होगा -

कालवाचक क्रिया विशेषण स्थानवाचक क्रिया विशेषण

उदाहरण के लिए,

हिन्दी:	हम	कल	बनारस जाएँगे।
		काल	स्थान

लेकिन हम किसी भी भारतीय भाषा में साधारणतया इस प्रकार भी कह सकते हैं:

हम बनारस कल जाएँगे।

इस वाक्य में काल चिन्हांकित (marked) है। इस वाक्य का अर्थ यह है कि हम बनारस कल ही जाएँगे न कि परसों या तरसों।

अन्य भारतीय भाषाओं में भी यही क्रम होता है - *काल वाचक-स्थानवाचक क्रिया विशेषण।*

तेलुगू:	मेमु	रेपु	बनारस	वेलताम्
	हम	कल	बनारस	जाएँगे
उड़िया:	अमे	कलि	बोनारस	जाउछु
	हम	कल	बनारस	जाएँगे
मिज़ो:	नकतुक	आह	बनारस	कन-कल अंग
		कल को	बनारस	हम जाएँगे।

5. भारतीय भाषाओं की एक और विशेषता यह है कि वाक्यों में शब्द क्रम नियत (fixed) नहीं बल्कि मुक्त (free) है। उदाहरण के लिए, 'मजनू ने लैला को खत लिखा' जैसे वाक्य को हम पदक्रम बदलकर इस प्रकार भी कह सकते हैं :

लैला को मजनू ने खत लिखा।

खत मजनू ने लैला को लिखा।

लिखा मजनू ने लैला को खत।

मजनू ने खत लैला को लिखा।

खत लैला को मजनू ने लिखा।

तेलुगू, उड़िया, बांग्ला, मलयालम आदि भाषाओं में भी पदक्रम में परिवर्तन स्वेच्छापूर्वक कर सकते हैं।

ध्यान देने वाली बात यह है कि सभी भारतीय भाषाओं में वाक्य के किसी भी अंश को फोकस या ज़ोर देने के लिए किसी भी वाक्य के पदक्रम में परिवर्तन ला सकते हैं।

अँग्रेज़ी, जर्मन व फ्रांसीसी भाषाओं के पदक्रम में इस प्रकार परिवर्तन मान्य नहीं है।

6. क्रिया-अन्त भाषाओं में सम्बन्ध-कारक निर्धारक से पहले प्रयुक्त होता है।

हिन्दी : दिल्ली **का** मेयर

इसमें **मेयर** निर्धारक है और **का** सम्बन्ध कारक परसर्ग है।

तेलुगूः	दिल्ली	योक्का	मेयरु
	दिल्ली	का	मेयर

तेलुगू में सम्बन्ध-कारक योक्का का अक्सर प्रयोग नहीं होता। इसलिए तेलुगू में दिल्ली मेयरु कहना भी ठीक रहेगा।

7. क्रिया-अन्त भाषाओं में तुलनात्मक वाक्यों में तुलना-सूचक परसर्ग हमेशा तुलनीय कर्म के बाद प्रयुक्त होता है।

हिन्दी :	सरिता	शर्मिला	से	सुन्दर है।
		तुलना का		तुलनात्मक
		मानक		परसर्ग

इस वाक्य में हम **सरिता की सुन्दरता की तुलना शर्मिला से** कर सकते हैं।

इसलिए **शर्मिला** तुलना का मानक है और तुलनात्मक तत्व से तुलना के मानक के बाद प्रयुक्त होता है।

तेलुगू :	सरिता	शर्मिला	कंटे	अन्दमुअयिनदि
	सरिता	शर्मिला	से	सुन्दर है।
	तुलना का		तुलनात्मक	
	मानक		तत्व या परसर्ग	

मिज़ो :	ज़ोवि	लालि	आइन अ-हमेलट्थ्रा ज़ौक	
	ज़ोवि	**लालि**	**से** सुन्दर	ज़्यादा
		तुलना	तुलनात्मक	
		का मानक	परसर्ग	

8. क्रिया-अन्त भाषाओं में काल और स्थान द्योतक क्रिया विशेषण अवरोही क्रम (Descending Order) में पाए जाते हैं जबकि क्रिया मध्य या क्रिया प्रथम भाषाओं में आरोही क्रम (Ascending Order) में पाए जाते हैं। उदाहरण के लिए,

   मैं आप से आगरे में विजयनगर कॉलोनी की पाँच नम्बर गली की 63 नम्बर कोठी की छत पर मिलूँगा।

इस वाक्य में आगरा एक बड़ी जगह है, उसका अंग है **विजयनगर कालॉनी** जो उससे छोटी जगह है। **पाँच नम्बर गली विजयनगर** कॉलोनी से छोटी है। यही क्रम 63 नम्बर कोठी और छत के लिए लागू होगा। अर्थात् स्थान वाचक क्रिया विशेषण के अंशों का क्रम अवरोही क्रम में होता है।

यही बात भारत की सभी भाषाओं में लागू होगी। इसके विपरीत अँग्रेज़ी व फ्रेंच जैसी क्रियामध्य भाषाओं में स्थान वाचक क्रिया विशेषण के अंगों का क्रम आरोही क्रम में होता है। उदाहरण के लिए, *आई विल मीट यू ऐट हाउस नं. 63 ऑन स्ट्रीट नं. 5 इन विजयनगर कॉलोनी इन आगरा।*

इसी प्रकार कालवाचक क्रिया विशेषण में भी हिन्दी में अवरोही क्रम और अँग्रेज़ी में आरोही क्रम पाया जाता है।

हिन्दी : सरिता ममता से 1995 दिसम्बर महीने की 25 तारीख की शाम को पाँच बजे मिलने आएगी।

अँग्रेज़ी : *सरिता वूड कम टू मीट ममता ऐट फाइव पीएम ऑन द टवेंट्टीफिफ्थ डिसेंबर, 1995।*

अगर हम ध्यान दें तो यह पता चलेगा कि कई मायनों में हिन्दी और अँग्रेज़ी या यों कहिए, क्रिया-अन्त और क्रिया-मध्य भाषाओं के पदक्रम के बीच *दर्पण प्रतिबिम्ब सम्बन्ध* (Mirror Image Relationship) है। अर्थात अगर क्रिया-अन्त भाषा में पदक्रम

एक्स **वाई** **ज़ेड** है तो

क्रिया-मध्य या क्रिया-प्रथम भाषा में

ज़ेड **वाई** **एक्स** होगा।

(विस्तार से देखिए, ग्रीनबर्ग, 1963, *"सम यूनिवर्सल ऑफ ग्रामर विद पर्टिकुलर रेफरेंस टू दि*

आर्डर ऑफ मीनिंगफुल कॉन्स्टीटयूएंट्स", यूनिवर्सल ऑफ लैंग्वेज से, एमआईटी प्रेस और के वी सुब्बाराव, 1974, *कम्प्लीमेंटेशन इन हिंदी सिंटैक्स*, एकेडमिक पब्लिकेशंस, दिल्ली)।

9. क्रिया मध्य भाषाओं में मौसम सम्बन्धी अभिव्यक्ति करने वाले वाक्यों में कर्त्ता के स्थान पर सामान्यतया सर्वनाम इट (it) का प्रयोग होता है।

अँग्रेज़ी: *इट इज़ हॉट इन डेल्ही*

इट इज़ कोल्ड इन डिसेंबर

इट इज़ रेनिंग इन कानपुर

इन वाक्यों में *इट* का प्रयोग सिर्फ कर्त्ता की जगह भरने के लिए हो रहा है। उदाहरण के लिए, वाक्य

(अ) के प्रश्न के उत्तर में वाक्य (आ) दे सकते हैं।

(अ) *व्हाट इज़ इट?*

(आ) *इट इज़ ए पैन।*

लेकिन नीचे दिए वाक्यों (इ) - (ई) को देखें। इनमें प्रयुक्त *इट* से *व्हाट इज़ इट* वाला प्रश्न नहीं बनता है।

(इ) *इट इज़ हॉट।*

(ई) *इट इज़ कोल्ड।*

कहने का तात्पर्य यह है कि **व्हाट इज़ इट?** जैसा प्रश्न करने पर हम इस प्रकार का उत्तर नहीं दे सकते की इट इज़ हाट/कोल्ड, क्योंकि इनमें *इट* कर्ता नहीं बल्कि सर्वनाम के तौर पर प्रयुक्त हुआ है:

इसी प्रकार नीचे दिए उदाहरणों की तरह के प्रश्न अव्याकरणिक हैं।

- *व्हॉट इज़ हॉट इन डेल्ही?*
- *व्हॉट इज़ कोल्ड इन डिसेम्बर?*
- *व्हॉट इज़ रेनिंग इन कानपुर?*

क्रिया-अन्त भाषाओं में हमें *इट* के समान शब्द की अभिव्यक्ति नहीं मिलती है। उदाहरण के लिए,

हिन्दी: दिल्ली में बहुत **गर्मी** पड़ रही है।

दिसम्बर में यहाँ बहुत **ठण्ड** पड़ती है।

कानपुर में बहुत **बारिश** हो रही है।

इन वाक्यों में गर्मी, ठण्ड और बारिश कर्त्ता हैं। यह कैसे पता चलता है? ये सभी संज्ञा कर्त्ता के स्थान में हैं और सभी स्त्रीलिंग एकवचन में हैं। इसीलिए क्रिया की अन्विति इन्हीं संज्ञाओं के लिंग और वचन के अनुसार हो रही है। इसी प्रकार अँग्रेज़ी जैसी भाषाओं में there जैसे शब्द के भी दो प्रयोग होते हैं - एक में क्रिया विशेषण के रूप में प्रयोग होता है। उदाहरण के लिए,

(1) रीटा सॉ हिम **देअर**।

(2) दे विल मीट हर **देअर**।

दूसरे में **देअर** का प्रयोग केवल कर्त्ता की जगह भरने के लिए होता है जिसको हम एक्सप्लिटिव (Expletive) या प्लीअनास्टिक (Pleonastic) या डमी (Dummy) **देअर** कह सकते हैं। उदाहरण के लिए :

(3) **देअर** इज़ समवन इन दि गार्डन।

(4) **देअर** इज़ ए बुक ऑन दि टेबल।

इन वाक्यों में **देअर** का अपना कोई अर्थ नहीं है। इन दोनों वाक्यों में प्रयुक्त **देअर** की जगह **वेयर** लिख कर प्रश्नवाचक वाक्य नहीं बनाया जा सकता।

(5) *__वेयर__ इज़ समवन इन दि गार्डन।

(6) *__वेयर__ इज़ ए बुक ऑन दि टेबल।

(1) और (2) वाक्यों में जो देअर है उसे हम वेयर शब्द से बदलकर प्रश्न कर सकते हैं। उदाहरण के लिए,

(7) **वेयर** डिड रीटा सी हिम?

(8) **वेयर** विल दे मीट हर?

किसी भी भारतीय भाषा में एक्सपलिटिव या प्लीअनास्टिक इट या देअर जैसे शब्दों का अनुवाद नहीं किया जा सकता क्योंकि इस प्रकार का वाक्य निर्माण अमान्य है।

10. भारतीय भाषाओं की एक विशेषता और है। इन भाषाओं में कर्त्ता या कर्म को वाक्य में व्यक्त करने की आवश्यकता नहीं है। 'मैं जा रहा हूँ' की जगह 'जा रहा हूँ' या 'वह गा रही है' की जगह पर 'गा रही है' का प्रयोग पूर्णत: उपयुक्त है। इसी प्रकार तेलुगू और ओडिया जैसी भाषाओं में भी सम्भव है -

तेलुगू : नेनु वेल्लतुन्नानु
मैं जा रही हूँ

वेल्लतुन्नानु

जा रही हूँ

आमे चदुवुतुन्नदि

वह पढ़ रही है

चदुवुतुन्नदि

पढ़ रही है

ओडिया : मू जाउछि

मैं जा रही हूँ

जाउछि

जा रही हूँ।

इस प्रकार कर्त्ता का स्थान रिक्त छोड़ना इतालवी, कोरियाई जैसी भाषाओं में भी सम्भव है। लेकिन अँग्रेज़ी, जर्मन, या फ्रांसीसी भाषाओं में यह सम्भव नहीं है। यह देखा गया है कि जिन भाषाओं में कर्त्ता और क्रिया में अन्विति होती है और अन्विति को दर्शाने के लिए क्रिया में कुछ अभिव्यक्ति हो, उन भाषाओं में कर्त्ता का लोप हो सकता है। करीब-करीब सभी भारतीय भाषाओं में (मलयालम और कुछ तिब्बतो-बर्मन भाषाओं को छोड़कर) कर्त्ता और क्रिया के बीच अन्विति होती है।

ऐसी भाषाएँ जिन में कर्त्ता के स्थान में प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम का लोप हो सकता है उनको **प्रो-ड्रॉप** (Pro-drop) या **सर्वनाम-लोप भाषाएँ** कहते हैं।

भारतीय भाषाओं में प्रत्यक्ष कर्म या परोक्ष कर्म बातचीत में लुप्त हो सकता है। उदाहरण के लिए, हिन्दी में अगर कोई यह सवाल पूछे कि 'क्या आपने वह गाड़ी खरीदी?' तो उस का उत्तर इस प्रकार होगा,

'जी हाँ, मैंने खरीदी।' या

'जी हाँ, खरीदी।'

हिन्दी में प्रत्यक्ष कर्म इन दोनों वाक्यों में लुप्त है। अगर कोई उपर्युक्त सवाल का जवाब प्रत्यक्ष कर्म के साथ दे तो वह जवाब अनुपयुक्त होगा। उदाहरण के लिए :

जी हाँ, मैंने वह खरीदी।

यह तभी उचित होगा अगर वक्ता सामने खड़ी कार की ओर संकेत करते हुए बोले।

इसी प्रकार अन्य भारतीय भाषाओं में भी प्रत्यक्ष कर्म और परोक्ष कर्म का लोप हो सकता है।

लेकिन अँग्रेज़ी, फ्रेंच जैसी भाषाओं में जब वाक्य में सकर्मक क्रिया होती है तो प्रत्यक्ष कर्म का होना अनिवार्य है। उदाहरण के लिए,

वक्ता ए : *डिड यू बॉय दि कार?*

वक्ता बी : *यस, आई बॉट इट।*

**यस, आई बॉट।*

कई अँग्रेज़ी बोलने वाले भारतवासी अक्सर अँग्रेज़ी वाक्यों में कर्म का लोप कर देते हैं।

अभी तक हमने यह देखा है कि वाक्य गठन में पदक्रम का क्या प्रभाव हो सकता है और क्रिया के स्थान के आधार पर कौन-कौन से सार्वभौमिक नियम उपलब्ध हो सकते हैं।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, भारत में चार भाषा परिवार की भाषाएँ हज़ारों सालों से बोली जाती आ रही हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि जब भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं तो क्या यह सम्भव है कि एक भाषा का दूसरी भाषा पर प्रभाव न पड़े। इसका उत्तर है - यह सम्भव नहीं है। जैसे कि जब भिन्न देश या प्रान्त के लोग साथ-साथ रहते हैं तो एक दूसरे पर रहन-सहन, आचार-व्यवहार का प्रभाव पड़ता है और दोनों में आदान-प्रदान होता है, वैसे ही जब भिन्न-भिन्न भाषा परिवार के भाषी एक-दूसरे के साथ हज़ारों साल एक साथ रहते हैं तो एक-दूसरे की भाषा पर भी प्रभाव पड़ता है और दोनों भाषा परिवारों में आदान-प्रदान होता है। इस आदान-प्रदान से नए-नए भाषा वैज्ञानिक लक्षणों (Features) का प्रादुर्भाव होता है। इस आदान-प्रदान पर विचार करने के लिए अब हम भारत के इतिहास में 2500 साल पहले क्या हुआ, उस पर गौर करेंगे।

सुप्रसिद्ध भाषाविज्ञानी सुनीति कुमार चटर्जी ने अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक *दि ओरिजिन एंड डेवलपमेंट ऑफ दि बेंगाली लैंग्वेज* (1926) में भारत के भाषा वैज्ञानिक इतिहास पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला है। उनके अनुसार भारत में विभिन्न भाषा परिवार के भाषियों में मेल होने से भाषाओं में अभिसरण (Convergence) हुआ है। जब आर्य भाषी हज़ारों साल पहले भारत आए थे तब उत्तर भारत में निषाद (ऑस्ट्रिक भाषी), किरात (तिब्बतो-बर्मन भाषी) और द्रविड़ भाषी पहले से उपस्थित थे। चूँकि आर्यभाषी संख्या में कम थे, वे भारत के स्थानीय लोगों के साथ घुल-मिल गए। इसका कारण यह था कि उस समय के स्थानीय लोगों की सभ्यता और संस्कृति बहुत ही ऊँचे दर्ज़े की थीं। आर्य जो आए थे, वे विच्युत (बारबोरिस) थे लेकिन उनमें उच्च स्तर का मानसिक बल, अनुशासन और नियमबद्धता थी जिनके कारण वे विश्व में कई स्थानों में अपना प्रभाव डाल चुके थे। उनकी भाषा भी उनके मानसिक बल की सूचक थी। चूँकि वे विजयी थे, इसलिए उनकी भाषा संस्कृत को उच्च स्तर की मान्यता प्राप्त हुई थी। चटर्जी महोदय के अनुसार ब्राह्मण हिन्दू धर्म आर्यों का नहीं था, वह था भारत के स्थानीय किरात, निषाद और द्रविड़ भाषियों का। हिन्दू धर्म के रीति-रिवाज़ों को संस्कृत भाषा में अनुवाद किया गया था। चटर्जी का मत कुछ इस प्रकार है: यहाँ नए-नए आए अपरिष्कृत घुमन्तू आर्यों की

वैदिक-भाषा में आर्य-पूर्व द्रविड़ रीतियो का रूपान्तरण कर उनका संस्कृतकरण किया गया क्योंकि वे पंजाब-सिन्ध और आमतौर पर गंगा के मैदानों में पहले से रह रहे ज़्यादा सभ्य निवासियों से बेहद प्रभावित थे।[1]

"भारत की भाषाएँ और भारत का इस समय का हरेक व्यक्ति विभिन्न जातियों, संस्कृतियों और भाषाओं के सम्मेलन का प्रतीक है।" (चटर्जी, 1979, 74)।

चटर्जी महोदय के अनुसार संस्कृत में जो लम्बे समास उपलब्ध हैं वे द्रविड़ भाषाओं के प्रभाव के कारण हैं।

शब्दों को जोड़ने की योगात्मक प्रक्रिया (Agglutinative Process) द्रविड़ भाषाओं का एक विशेष लक्षण है। चटर्जी महोदय के अनुसार संस्कृत भाषा में और द्रविड़ भाषाओं में बहुत आदान-प्रदान हुआ है।

शेष लेख में हम इस आदान-प्रदान का उल्लेख करेंगे।

1. **मूर्धन्य ध्वनियाँ**: ट, ड, ठ, ढ, ड़, ढ़, ल आदि ध्वनियाँ मूर्धन्य ध्वनियाँ कहलाती हैं। इनके उच्चारण में जिव्हा का अग्र भाग कठोर तालु को स्पर्श करता है। ये ध्वनियाँ संस्कृत, पालि, हिन्दी, मराठी, तेलुगू, मिज़ो, आदि सभी भारतीय भाषाओं में उपलब्ध हैं। चटर्जी, एमिनोउ, क्वाईपर आदि भाषा वैज्ञानिकों के अनुसार मूर्धन्य ध्वनियों का विस्तार द्रविड़ भाषाओं से अन्य भाषाओं में हुआ है। संस्कृत जो आर्य भाषा है, वास्तव में भारोपीय (Indo-European) परिवार की भाषा है। अन्य किसी भी भारोपीय परिवार की भाषा में मूर्धन्य ध्वनियाँ उपलब्ध नहीं हैं। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि संस्कृत और अन्य द्रविड़ेतर भारतीय भाषाओं में इन ध्वनियों का फैलाव द्रविड़ भाषाओं से ही हुआ है।

2. **संयुक्त क्रियाएँ**: संयुक्त क्रिया दो या दो से अधिक क्रियाओं के मेल से बनती है जैसे *कर लेना, पढ़ देना, आ जाना* इत्यादि। इनमें प्रथम क्रिया मुख्य क्रिया होती है और दूसरी गौण। चटर्जी महोदय के अनुसार इस प्रकार की संयुक्त क्रियाएँ जो भारत की सभी भाषाओं में मौजूद हैं, द्रविड़ भाषाओं के प्रभाव के कारण है। उदाहरण के लिए:

हिन्दी:	**राधा ने**	**काम कर**	**दिया था।**	
		मुख्य क्रिया	सहायक क्रिया	
तेलुगू:	रामुडु	पनी	चेसि	वेसेडु
	राम	काम	कर	दिया
		मुख्य क्रिया	सहायक क्रिया	
ओडिया:	राधा	कामों	कौरि	देला
	राधा	काम	कर	दिया

3. **अनुकरण शब्द रचना**: भारतीय भाषाओं में अनुकरण शब्द रचना बहुत प्रचलित है। उदाहरण के लिए, जब कोई गिरता है तो हम कहते हैं कि 'वह धड़ाम से गिरा'। सभी भारतीय भाषाओं में इनका फैलाव द्रविड़ या आस्ट्रो-एशियाटिक मुण्डा भाषाओं से हुआ है।

हिन्दी: कट-कट की आवाज़

तेलुगू: धन मनि (धड़ाम से)

ओडिया: धड किना/धम किना/धड़ कौरि/धम कौरि (धड़ाम से)

बांग्ला: धोप कोरे (धड़ाम से)

4. **प्रतिध्वनि शब्द** (Echo Words): सभी भारतीय भाषाओं में प्रतिध्वनि शब्दों का प्रयोग होता है। उदाहरण के लिए,

हिन्दी: *चाय-वाय* कुछ भी चलेगी।

इस वाक्य में '**वाय**' का अपना कोई अर्थ नहीं है। इस वाक्य से वक्ता यह सूचित करना चाहता है कि इस बात की कोई पाबन्दी नहीं है कि सिर्फ चाय ही हो, चाय या ऐसा कोई पेय ठीक रहेगा। हम कुछ और उदाहरण प्रस्तुत करेंगे,

हिंदी: खाना-वाना

शाला-वाला

कुर्सी-वुर्सी

बुक-वुक

पानी-वानी

ड्रिंक-विंक

तेलुगू: पुलि-गिलि

बाघ-वाग

अन्न्य-गिन्न्य

खाना-वाना

शालु-गीलु

---

1. The pre-Aryan Dravidian practices were "sanskritsied by being rendered into Vedic speech of the Aryans, who came as a new and unsophisticated nomadic people, tremendously impressed by the earlier and more civilised inhabitants of the Punjab and Sindh areas, western...as well as gangetic India in general" (सुनीति कुमार चटर्जी, *इंडो आर्यन एंड हिन्दी*, 1975)।

शाल-वाल

कुर्ची-गिर्ची

बुक्कू-गिक्कु

नील्लु-गील्लु

ड्रंकु-गिंकु

उड़िया: खाना-फाना/वाना

चौवुलै-फावुलौ

कश्मीरी: किताब-शिताब

चाय-शाय

5. **पुनरुक्ति** (Reduplication): सभी भारतीय भाषाओं में संज्ञा, विशेषण, क्रिया विशेषण को पुनरुक्त किया जा सकता है।

हिन्दी: (संज्ञा) घर-घर में

बच्चा-बच्चा

संज्ञा की पुनरुक्ति से सम्पूर्णता को, अथवा खास हिस्से को या बदलाव को दिखाया जा सकता है। घर-घर में का अर्थ है हर एक घर में और बच्चा-बच्चा का अर्थ है हरेक बच्चा। धीरे-धीरे में निरन्तरता व गति है, अपना-अपना में क्षेत्र को बांधा गया है आदि। इसी में नीचे हम हिन्दी, उड़िया और तेलुगू भाषाओं में पुनरुक्ति के कुछ उदाहरण प्रस्तुत करेंगे।

	हिन्दी	**उड़िया**	**तेलुगू**
संज्ञा			
	घर-घर	घौरे-घौरे	इन्टि-इन्टि लो
	पन्ना-पन्ना	पृष्टा-पृष्टा	पेजि-पेजि
क्रिया विशेषण			
	धीरे-धीरे	धीरे-धीरे	नेम्मदि-नेम्मदि गा
	आहिस्ते-आहिस्ते	आस्ते-आस्ते	मेल्ला-मेल्ला गा
निजवाचक सर्वनाम			
	अपना-अपना	निजौ-निजौ	तना-तना

क्रिया विशेषण-अपूर्णकालिक कृदन्त

चलते-चलते	चलु-चलु	नडुस्तू-नडुस्तू
पढ़ते-पढ़ते	पौढु-पौढु	चदुवुतू-चदुवुतू

योगात्मक कृदन्त (कंजंक्टिव पार्टीसिपल)

कर-कर के	कौरि-कौरि	चेसि-चेसि
पढ़-पढ़ के	पौढ़ि-पौढ़ि	चदिवि-चदिवि
बैठ-बैठ कर	बौसि-बौसि	कूर्चोनि-कूर्चोनि

भारतीय भाषाओं में हर एक व्याकरणिक कोटि के शब्दों की पुनरावृत्ति या पुनरुक्ति हो सकती है। (इस विषय में अधिक जानकारी के लिए अन्विता अब्बि की पुस्तक *रिडुप्लीकेशन इन साउथ एशियन लैंग्वेज- एन एरियल, टाइपोलॉजिकल एंड हिस्टॉरिकल स्टडी* (1992) देखिए)।

6. **योगात्मक कृदन्त** (Conjunctive Participle): साधारणतया वाक्य से वाक्य जोड़ने के लिए संयोजक (Conjunction) का प्रयोग किया जाता है। अँग्रेज़ी में **एंड**, हिन्दी में **और** तथा तेलुगू में **मरियु** का प्रयोग होता है। हरेक वाक्य में एक समापिक क्रिया (जिससे कार्य का खत्म होना सूचित होता है) का होना अनिवार्य है। जब एक वाक्य को दूसरे वाक्य से संयोजक के द्वारा जोड़ते हैं तो दोनों वाक्यों की क्रियाएँ समापिक ही होती है। उदाहरण के लिए,

आशा **मेट** *राहुल एंड* **दे टॉक्ड** *टू ईच अदर एंड दे* **गॉट** *मैरिड।*

यह वाक्य तीन वाक्यों का जोड़ है इसलिए तीन समापिक क्रियाएँ **मेट, टॉक्ड** और **गॉट** मौजूद हैं।

भारतीय भाषाओं की एक खास विशेषता यह है कि हम इन भाषाओं में वाक्यों को समुच्च्य बोधक से जोड़ने के अलावा योगात्मक कृदन्त से जोड़ सकते हैं। हिन्दी में योगात्मक कृदन्त का द्योतक 'कर' या 'के' है जो क्रिया के धातुरूप (यानी क्रिया के मूल रूप जैसे, 'खा', 'पढ़', 'जा' आदि। इन्हें Verb Stem या Verb Root भी कहते हैं) के बाद आता है। उदाहरण के लिए, 'हम **घर** जा**कर** नहा धो**कर**, कपड़े बदल**कर** खाना खा**कर**, सोफे पर लेट**कर** ही सो गए'। इस वाक्य में 'जाकर', 'खाकर' इत्यादि योगात्मक कृदन्त के उदाहरण हैं और 'सो गए' को छोड़ दें तो यहाँ आई सभी क्रियाएँ असमापिक क्रियाएँ हैं। 'सो गए' समापिक क्रिया है। इस प्रकार वाक्यों को जोड़ने की प्रक्रिया सिर्फ भारतीय भाषाओं में ही उपलब्ध है। हमारी भाषाओं में इन वाक्यों को समुच्च्य बोधक 'और' से जोड़ना अमान्य है। अगर जुड़ने वाले वाक्यों की संख्या 'क' मानी जाए तो योगात्मक कृदन्त क-1 होंगे और एक क्रिया समापिक क्रिया होगी। हम तेलुगू से एक उदाहरण प्रस्तुत करेंगे।

तेलुगू:	मेमु	इन्टिकि	वेल्लि	स्नानम	चेसि
	हम	घर	जाकर	नहा-धो	कर
	बट्टलु	मार्चु	कोनि	भोजनम	चेसि
	कपड़े	बदल	कर	खाना	खाकर
	सोफ़ा	मीदा	पडु कोने	निद्र	पोयेमु
	सोफे	पर	लेटकर	ही	सो गए

अँग्रेज़ी में इस प्रकार का वाक्यविन्यास कुछ इस तरह का होगा:

हैविंग हिअर्ड दि न्यूज़ शी फेल्ट हैप्पी।

यह कहना ज़रूरी है कि भारतीय भाषाओं में योगात्मक कृदन्त से वाक्यों को जोड़ना समुच्च्य बोधक से जोड़ने से ज़्यादा सहज माना जाता है।

हमने अब तक एक ध्वनि से सम्बन्धित लक्षणों (संयुक्त क्रियाएँ, अनुकरण शब्द रचना, प्रतिध्वनि शब्द, पुनरुक्ति और संयोजक कृदन्त) पर गौर किया है। इन सभी लक्षणों पर पहले-पहल सुनीति कुमार चटर्जी (1926) ने अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक *ऑरिजिन एंड डेवलपमेंट ऑफ दि बेंगाली लैंग्वेज* में ध्यान दिया था। उनका मत था कि इन सभी लक्षणों का फैलाव द्रविड़ भाषाओं से आर्यभाषाओं में हुआ है। बाद में एमिनो, क्वाइपर साउथ वर्थ और मसीका जैसे भाषाविज्ञानियों ने भी इस मत का समर्थन किया था। भाषाविज्ञानी हॉक के अनुसार हम निस्सन्देह रूप से यह नहीं कह सकते कि द्रविड़ भाषाओं का आर्यभाषाओं पर प्रभाव पड़ा है।

अब हम इस बात पर विचार करेंगे कि प्रत्यक्ष कथन (Direct Speech) और परोक्ष कथन (Indirect Speech) का भारतीय भाषाओं में क्या रूप है।

भारतीय भाषाओं की एक और विशेषता यह है कि इनमें प्रत्यक्ष कथन और परोक्ष कथन में कोई अन्तर नहीं है। अँग्रेज़ी जैसी भाषाओं में उद्धृत वाक्य (Quotation) को जब परोक्ष कथन में बदलते हैं तो उद्धृत वाक्य में सर्वनाम का परिवर्तन होता है और मुख्य वाक्य के काल के अनुसार गौण वाक्य के काल में परिवर्तन करना आवश्यक होता है। इस प्रकार काल परिवर्तन करने को हम काल संगति (Tense Harmony) कह सकते हैं। उदाहरण के लिए, *माधुरी टोल्ड मी, 'आई विल विन दि ऑस्कर'* को परोक्ष कथन में इस प्रकार बदला जा सकता है:

मधुरी टोल्ड मी दैट शी वुड विन दि ऑस्कर।

अँग्रेज़ी में इस वाक्य में दो परिवर्तन किए गए है:

1. मुख्य वाक्य की क्रिया **टोल्ड** भूतकाल में है। इसलिए उपवाक्य (Subordinate Clause) का काल भी भूतकाल में बदला गया। **विल** सहायक क्रिया को **वुड** में बदला गया। अँग्रेज़ी में यह कहना गलत होगा -

   **माधुरी टोल्ड मी दैट शी विल विन दि ऑस्कर*

यह वाक्य इसलिए गलत है कि इसमें मुख्य और उपवाक्य में काल संगति नहीं है।

2. परोक्ष कथन में उपवाक्य में कर्त्ता तृतीय पुरुष (Third Person) में बदला गया क्योंकि मुख्य वाक्य की कर्त्ता माधुरी तृतीय पुरुष में है। अगर इस प्रकार का परिवर्तन नहीं किया गया हो तो उस वाक्य का अर्थ कुछ और होगा। उदाहरण के लिए:

माधुरी टोल्ड मी दैट आई हैड वन दि ऑस्कर।

इस वाक्य का अर्थ यह होगा कि ऑस्कर जीतने वाली माधुरी नहीं है बल्कि *आई* (मैं) है, जो इस वाक्य का वक्ता है।

सभी भारतीय भाषाओं में इस तरह का बदलाव - पुरुष में या काल में या दोनों में - करने की कोई आवश्यकता नहीं है। उदाहरण के लिए:

माधुरी ने मुझ से कहा, “मुझे ऑस्कर पुरस्कार ज़रूर मिलेगा।”

माधुरी ने मुझ से कहा कि मुझे ऑस्कर पुरस्कार ज़रूर मिलेगा।

जैसा कि हम देख सकते हैं, हिन्दी में परोक्ष कथन में न तो पुरुष में न ही काल में कोई परिवर्तन किया गया।

अब हम तेलुगू का एक उदाहरण प्रस्तुत करेंगे :

प्रत्यक्ष कथन:

माधुरी	नातो	अन्दि,	“नाकु	ऑस्कर	बहुमति	तप्पका	वस्तुन्दि”
माधुरी	मुझसे	कहा,	“मुझे	ऑस्कर	पुरस्कार	ज़रूर	मिलेगा"।

परोक्ष कथन:

नाकु	ऑस्कर	बहुमति	तप्पका	वस्तुन्दि	अनि	माधुरि	नातो	अन्दि।
मुझे	ऑस्कर	पुरस्कार	ज़रूर	मिलेगा	कि	माधुरी	मुझसे	बोली

माधुरी ने मुझसे कहा कि मुझे ऑस्कर पुरस्कार ज़रूर मिलेगा।

जैसे हिन्दी में परोक्ष कथन के वाक्य में कोई परिवर्तन नहीं किया गया, वैसे ही तेलुगू में भी नहीं किया गया। और न किसी अन्य भारतीय भाषा में किया जाता है।

प्रश्न बनाने के तौर तरीके के बारे में एक और विशेष बात यह है कि अँग्रेज़ी व फ्रेंच जैसी भाषाओं में प्रश्नवाचक शब्द हमेशा वाक्य के शुरुआत में ही आता है चाहे आप कर्त्ता के बारे में कथन करें या प्रत्यक्ष कर्म के बारे में या परोक्ष कर्म के बारे में। उदाहरण के लिए,

कर्त्ता के बारे में प्रश्न (subject questioned): *हू गेव दि बुक टू सीता?*

इस वाक्य के उत्तर में जो भी जवाब मिलेगा वह उस उत्तर के कर्त्ता को सूचित करता है:

राम गेव दि बुक टू सीता।

कर्म के बारे में प्रश्न (Object Questioned): *वाह्ट डिड राम गिव टू सीता?*

इसके बारे में उत्तर में 'बुक' आएगा जो इस वाक्य का प्रत्यक्ष कर्म होगा। ध्यान देने योग्य बात यह है कि प्रश्नवाचक शब्द प्रश्न वाक्य की शुरुआत में आता है। यह कहना ठीक नहीं होगा कि-

**राम गेव वाह्ट टू सीता?*

भारतीय भाषाओं में प्रश्नवाचक शब्द के स्थान में कोई परिवर्तन नहीं लाया जाता क्योंकि कर्त्ता को प्रश्न करने वाला प्रश्नवाचक शब्द वाक्य की शुरुआत में आता है। उदाहरण के लिए :

हिन्दी:	किसने	सीता	को	किताब	दी?
तेलुगू:	*एवरु*	*सीता*	*कि*	*पुस्तकम*	*इच्चेरु?*
	कौन	सीता	को	किताब	दिया?
	किस ने	सीता	को	किताब	दिया?
मिज़ो:	*तुंगे*	*ज़ोवि*	*ह्नेना*	*लेखबु*	*पे?*
	कौन	ज़ोवि	को	किताब	दी
	किस ने	ज़ोवि	को	किताब	दिया?

चाहे आप प्रत्यक्ष कर्म को या परोक्ष कर्म को या क्रिया विशेषण को प्रश्न करें, प्रश्नवाचक शब्द भारतीय भाषाओं में उसी स्थान पर आता है जहाँ प्रत्यक्ष कर्म या परोक्ष कर्म या क्रिया विशेषण निर्देशक (Declarative) वाक्य में आता है। उदाहरण के लिए :

राम ने सीता को क्या दिया? (प्रत्यक्ष कर्म)

राम ने किसको किताब दिया? (परोक्ष कर्म)

राम ने सीता को किताब कब दिया? (क्रिया विशेषण समयवाचक)

राम ने सीता को किताब कहाँ दिया? (क्रिया विशेषण स्थानवाचक)

यह बात सिर्फ भारतीय भाषाओं की ही विशेषता नहीं है कि प्रश्नवाचक शब्द उसी स्थान पर आता है जहाँ संज्ञा या क्रिया विशेषण निर्देशक वाक्य में आता है बल्कि दुनिया में और

भी भाषाएँ हैं जहाँ इस प्रकार की प्रक्रिया उपलब्ध है। इस प्रक्रिया को हम कह सकते हैं कि प्रश्नवाचक शब्द अस्थानान्तरणीय (in situ) है।

इस लेख का उद्देश्य यह साबित करना था कि भारतीय भाषाएँ भले ही अलग-अलग परिवार की हों और भले ही बाह्य रूप से एक-दूसरे से अलग दिखाई देती हों, उन सब में कई बातों में सादृश्यता है। यह सादृश्यता दो मुख्य कारणों की वजह से है। एक कारण यह है कि भारतीय भाषाएँ क्रिया-अन्त भाषाएँ हैं (खासी भाषा को छोड़कर)। दूसरा कारण यह है कि विभिन्न भाषा परिवारों की भाषाएँ एक ही देश में ढाई हज़ार साल से ज़्यादा एक साथ रहीं। इस प्रकार साथ रहने से कई व्याकरणिक लक्षणों का भाषाओं के बीच में आदान-प्रदान हुआ। इस प्रकार के आदान-प्रदान का अर्थ हुआ कि हज़ारों सालों से भारत में बहुभाषिता के होने पर भी यहाँ के वक्ता हमेशा बिना किसी खास परेशानी के एक-दूसरे के साथ बात करते रहे, विचार-विमर्श करते रहे। अर्थात भारत में बहुभाषिता कभी बाधक न रही और न ही रहेगी। जैसे कि पहले कहा जा चुका है कि आम भारतवासी एक से ज़्यादा भाषाएँ जानता ही है। अर्थात भारतवासियों में विश्व के किसी भी अन्य देशों के व्यक्ति की तरह एक से ज़्यादा भाषा सीखने की क्षमता है।

स्रोत

- कारुमूरि वेंकट सुब्बाराव, "भारतीय भाषाओं के बारे में एक नोट", *पश्यन्ती*, जुलाई-सितम्बर 1995, भाषा विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

सन्दर्भ

- एम बी एमेनेऊ, "इंडिया एज़ ए लिंग्विस्टिक एरिया", *लिंग्विस्टिक सोसायटी ऑफ अमेरिका*, वॉल्यूम 32, नंबर 1, जनवरी-मार्च 1956, पृ 3-16।
- सुनीति कुमार चटर्जी, *इंडो आर्यन एंड हिन्दी*, 1975।
- फ्रांसिस कीपर एवं बी जे कब, 1967, "द जेनेसिस ऑफ लिंग्विस्टिक एरिया", *इंडो इरानियन जरनल*, 10: 81-102।
- बर्रो टी और एम बी एमनेऊ, 1961-68, *ए द्रविडियन एटाइमोलॉजिकल डिक्शनरी*, ऑक्सफोर्ड।
- टी बरो, 1972, "द प्रिमिटिव द्रविडियन वर्ड फॉर द हॉर्स आई", *जे डी एल*, 1:1, 18-25।